शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 16-09-2020, वर्ग - BA-III

वाणिज्यिक क्रांति

विश्व के आर्थिक इतिहास वाणिज्यिक क्रांति (Commercial Revolution) उस अवधि को कहते हैं जिसमें आर्थिक प्रसार, उपनिवेशवाद और व्यापारवाद (Mercantilism) का जोर रहा। यह अवधि लगभग सोलहवीं सदी से आरंभ होकर अट्ठारहवीं सदी के आरंभ तक मानी जाती है। इसके बाद के अवधि में औद्योगिक क्रांति हुई।

आधुनिक पश्चिमी विश्व की आर्थिक क्रांति —

सामंतवाद का पतन, धर्म सुधार आंदोलन एवं पुनर्जागरण तीन ऐसे प्रमुख कारक थे जिन्होंने यूरोप में आधुनिक युग के आरंभ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुनर्जागरण और वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप में आर्थिक प्रगति के दौर आरंभ हुआ। वैज्ञानिक क्रांति ने औद्योगिक क्रांति एवं कृषि क्रांति का आधार तैयार किया और इसके

बाद यूरोप में वाणिज्यवाद का प्रारंभ हुआ। यूरोपीय वाणिज्यवाद ने आधुनिक पाश्चिमी विश्व में आर्थिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया। यूरोप में जो भौगोलिक खोजे सम्पन्न हुई उससे यूरोपीय व्यापारी समुद्री मार्ग से कम से कम अफ्रीका एवं एशिया पहुँचे और इससे यूरोपीय व्यापार में तेजी आयी। आयात-निर्यात को गति एवं प्रोत्साहन मिला। यूरोपीय उद्योगों के लिए एशिया से भारी मात्रा में कच्चा माल प्राप्त हुआ। निर्मित माल की खपत के लिए एशिया, अमेरिका एवं अफ्रीका के रूप में एक बड़ा बजार मिला। इससे यूरोप में अत्यधिक आर्थिक समृद्धि का दौर आरंभ हुआ। यूरोपीय व्यापारियों ने भारी मुनाफा कमाया।

यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति का आरंभ क्रमशः दो घटनाओं का प्रतिफल था —

1) धर्मयुद्ध (1095 ई.-1291 ई.) एवं व्यापारी

वर्ग का अभ्युदय।

2) तुर्कों का कुस्तुनतुनिया (एशिया माइनर) पर अधिकार (1453 ई.) एवं भौगोलिक खोजें।

1) धर्मयुद्धों का प्रभाव एवं व्यापारिक वर्ग का अभ्युदय —

ईसाइयों के पवित्र तीर्थ स्थल जेरूसलम को तुर्कों से मुक्त कराने के लिए एक दीर्घकालीन (1095 ई. से 1291 ई.) धर्मयुद्ध (क्रुसेड) चला। इस धर्मयुद्ध का एक महत्वपूर्ण प्रभाव यह हुआ कि भारत की भोगविलास की वस्तुओं, मालाबार क्षेत्र के एवं पूर्वी द्वीप समूहों के मसाले आदि का ज्ञान हुआ। तेरहवीं सदी में मारकोपोलो ने वेनिस से चीन तथा जापान की यात्रा की। मार्कोपोलो के विवरणों से भी यूरोपवासियों को पूर्वी देशों की वस्तुओं के विषय में जानकारी प्राप्त हुई थी। इन सब घटनाओं का प्रभाव यह हुआ कि अब पूर्वी देशों की भोग-विलास की वस्तुओं एवं मसालों की मांग यूरोप में होने लगी और इस प्रकार यूरोप में एक नवीन वर्ग व्यापारी वर्ग का उदय हुआ।

इन व्यापारियों ने पूर्वी देशों के साथ व्यापार के द्वारा अत्यधिक धन अर्जित किया।

1200 ई० से 1400 ई० के बीच यूरोप में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली व्यापारिक मेलों में भी यूरोपीय व्यापार के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। दिल्ली का नगर वेनिस, पिसा एवं जिनेवा आदि व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे। यूरोपीय तथा पूर्वी देशों के मध्य व्यापार का प्रमुख केन्द्र कुस्तुनतुनिया था। यूरोप के व्यापारी पूर्वी देशों से मसाले, हीरे, जवाहरात, रेशमी कालीन, सिल्क, सुगंधित वस्तुएं औषधियां तथा चीनी आदि लाकर लाभ कमाते थे।

2) कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार एवं भौगोलिक खोज :- धर्म युद्ध (क्रूसेड) के पश्चात हुई यूरोपीय व्यापारिक प्रगति को 1453 ई० में उस समय गहरा आघात लगा जबकि कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों ने अधिकार कर लिया। इससे पूर्व